इतिहास (History)

हुमायूँ (Humayun)

हुमायूँ (Humayun) (1530-40, 1555-56 ई.)

जन्म (Birth)	– **1508** ई. को काबुल में **(Humayun was born in 1508 Kabul)**
मृत्यु (Died)	– **1556** ई. को दिल्ली में **(Humayun died in Delhi on 1556)**
माता (Mother)	– माहम बेगम **(Maham Begum)**
पिता (Father)	– बाबर **(Babar)**
पत्नी (Wife)	– हमीदा बानो बेगम (हाजी बेगम), बेगा बेगम, शहजादी खानम, मिवेहजान/**Hamida Banu Begum (Haji Begum), Bega Begum, Sahjadi Khanam, Mibehjaan**
बहन (Sister)	– गुलबदन बेगम **(Gulbadan Begum)**
पुत्र (Son)	– अकबर **(Akbar)**
भाई (Brother)	– कामरान, अस्करी, हिन्दाल **Kamran, Askari, Hindal**
दादी (Grand Mother)	– कुतुलुग निगार खाँ **(Qutulugh Nigar Khan)**
उत्तराधिकारी(Successor)	– अकबर**(Akbar)**
सेनापति(Commander)	– बैरम खाँ **(Bairam Khan)**
बजीर(Wazir)	– निजामुद्दीन अहमद, हिन्दुबैग **Nizamuddin Ahmad, Hindubegh**
मकबरा (Tomb)	– दिल्ली में **(Delhi)**

हुमायूँ के दुश्मन (Enemies of Humayun)

बहादुर शाहँ **(Behadur Shah) – गुजरात (Gujrat)**
शेरखान **(Sher Khan) – बिहार (Bihar)**
महमूद लोदी **(Mehmood Lodhi) – बंगाल (Begal)**

– हुमायूँ 29 दिसम्बर 1530 को आगरा में 23 वर्ष की अवस्था में मुगल बादशाह बना।

He became the Mughal Emperor in Agra on 29 December 1530 at the age of 23.

हुमायूँ ने अपने भाईयों के बीच में साम्राज्य को बाँट दिया

He divided the empire among his brother Askari, Hindal and Kamran.

हुमायूँ **(Humayun) – दिल्ली, आगरा (Delhi, Agra)**
कामरान **(Kamran) – काबुल, कन्धार (Kabul, Kandhar)**
अस्करी **(Askari) – संभल (Sambhal)**
हिन्दाल **(Hindal) – अलवर (Alwar)**

'हुमायूँ' शब्द का अर्थ 'भाग्यशाली' होता है

The word 'Humayun' means 'fortunate'.

हुमायूँ एक अच्छा गणितज्ञ और ज्योतिष था।

Humayun was an accomplished Mathematician and an Astronomer.

हुमायूँ की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी हमीदा बानो बेगम (हाजी बेगम) हुमायूँ का मकबरा दिल्ली में बनवाया। यह मकबरा दौहरी गुम्बद वाला भारत का पहला मकबरा था। यह संगमरमर से बना था। इस मकबरे का वास्तुकार मिर्जा ग्यास बेग था।

Hamida Bano Begum (Haji Begum) was the wife of Humayun and after his death she built the Humayun Tomb in Delhi. It was India's first tomb with a double dome. It was made of Marbal. Architect of this tomb's was Mirza Gyas Beg.

हुमायूँनामा पुस्तक हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम ने फारसी भाषा में लिखी। यह पुस्तक हुमायँ के जीवनी पर आधारित है।

Humayun nama Autobiography of Humayun, was written by Gulbadan Begum (sister of Humayun) in persian language.

पुराना किले के निर्माण की शुरुआत हुमायूँ ने करायी लेकिन इसे पुरी तरह शेरशाह सूरी ने बनवाया।

The Puranaqila was constructed by Humayun but its construction was completed by Shershah Suri.

1533 ई. में हुमायूँ ने दिल्ली में दीनपनाह (शरणार्थियों के लिए) नामक एक भवन बनवाया हुमायूँ ने दीनपनाह को द्वितीय राजधानी घोषित किया और पहली राजधानी काबुल थी।

In the year 1533, Humayun built the city of Dinpanaha (World refuge), in Delhi for the refugees. He declared Dinpanha to be the second capital and the first capital was Kabul.

कालिंजर का युद्ध **(1531) (Battle of Kalinjar 1531)**

हुमायूँ और प्रताप रुद्र देव के बीच

Humayun v/s Pratap Rudra Dev

◦ ◦

जीता **(Won)** हारा **(Loss)**

दौहरिया का युद्ध **1531**

(Battle of Dohariya 1531)

हुमायूँ और महमूद लोदी के बीच

(Humayun V/S Mahmood Lodhi)

◦ ◦

जीता**(Won)** मर गया**(Died)**

1532 ई. में हुमायूँ ने चुनार गढ़ पर हमला किया क्योंकि बहादुर शाह, शेरशाह की मदद कर रहा था और सेना को आगरा की ओर भेज रहा था।

In 1532 Humayun attacked on Chunargarh because of Bahadur Shah started sending his force to Agra and hep Sher Khan.

1533 ई. में हुमायूँ ने बहादुर शाह को हरा दिया।

In 1533 Humayun defeated Bahadur Shah.

1538 ई. में हुमायूँ ने दूसरी बार चुनारगढ़ पर हमला किया।

In 1538 Humayun did his second attacked on Chunargarh.

चौसा का युद्ध **1539 (Battle of Chausa 1539)**

हुमायूँ और शेरखान के बीच **(Humayun V/S Sher Khan)**

◦ ◦

हारा **(Loss)** जीता **(Won)**

इस युद्ध के जीतने के बाद शेर खान ने शेरशाह की उपाधि धारण की।

After winning the battle of Chausa Sherkhan took the title of Sher Shah.

इस युद्ध में हुमायूँ की जान निजाम साका नामक भिश्ती ने बचाई। आगे चलकर ऐसा कहा जाता है। हुमायूँ ने इस भिश्ती को एक दिन के लिए बादशाह बनाया और चमड़े के सिक्के जारी किये।

In this born the boat man who saved the life of Humayun named Nizam Shaka was gifted to become one days Emperor and launched leather coins.

कन्नौज या बिलग्राम का युद्ध (1540 ई.)
(Battle of Kannauj/Bilgram 1540)

इस युद्ध में शेरशाह सुरी ने हुमायूँ को पूरी तरह हरा दिया और सूरीवंश की स्थापना की।
Shershah Suri completely defeated Humayun and founded the Suri Dynasty.
इन दो लागातार युद्धों के हारने के बाद हुमायूँ शरणार्थी बनकर ईरान चला गया और वहाँ 12 वर्षो तक रहा। हुमायूँ ने तीन वर्षो में अपनी सेना को संगठित किया और भारत पुनः लौटा।
After two continuous defeat by Shershah Suri, Humayun escaped to Iran and he stayed there in exile for 12 years, and in 3 years he regorganized his army and came back to India.

मच्छीवाड़ा का युद्ध (पंजाब) 1555 ई.
(Battle of Macchiwara(Punjab)1555)

इस युद्ध में हुमायूँ ने अफगानों को हरा दिया
Humayun defeated Afghan

सरहिन्द का युद्ध 1555 ई.
(Battle of Sarhind 1555)

इस युद्ध में हुमायूँ ने शेरशाह सूरी के पुत्र सिंकदर शाह सुरी को हरा दिया
Humayun re-captured the empire by defeating the last Suri ruler Sikhandar Shah Suri, son of Shershah Suri.
हुमायूँ की मृत्यु एक दुर्घटना के कारण शेरमण्डल नामक पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर 1556 ई. में हो गयी।

He died by an accidental fall from staircase of his library 'Shermandal' at the Puranaqila in Delhi on 24 Jan, 1556.

बाबर ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपने चारों पुत्रों में से हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था। हुमायूँ 12 वर्ष की अवस्था में बदख्शाँ का सूबेदार बना था। 22 वर्ष की अवस्था में 1530 ई. को आगरा में हुमायूँ का राज्यभिषेक हुआ।

हुमायूँ के बारे में जानकारी हुमायूँनामा पुस्तक से मिलती है। यह पुस्तक इसकी बहन गुलबदन बेगम ने फारसी भाषा में लिखी थी।

लैनपूल ने हुमायूँ के बारे में लिखा है- कि "हुमायूँ जीवनभर लड़खड़ता रहा और लड़खड़ाते हुए ही मर गया।" हुमायूँ की मृत्यु शेरमण्डल नामक पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर हुई थी।

हुमायूँ ने दिल्ली में दीनपनाह नामक भवन बनवाया। हुमायूँ ने हिसार में फतेहाबाद की मस्जिद बनवाई। हुमायूँ का मकबरा उसकी पत्नी हाजी बेगम ने बनवाया। इस मकबरे का वास्तुकार मिर्जा ग्यास बेग था। दौहरी गुम्बदवाला यह भारत का पहला मकबरा था यह संगमरमर से बना था। इस मकबरे में चार बाग पद्धति का पहली बार प्रयोग किया गया था। हुमायूँ के मकबरे को 'ताजमहल का पूर्वगामी' कहा जाता है।

हुमायूँ के मकबरे में मुगल वंश के सर्वाधिक व्यक्ति दफनाये गए है, जिनमें हुमायूँ के अलावा हाजी बेगम, हमीदा बानो बेगम, हुमायूँ की छोटी बेगम, दारा शिकोह, जहाँदारशाह, फर्रूखशियर, रफीउद्दजात, रफीउद्दौला और आलमगीर द्वितीय हैं।

मुगलों का अन्तिम बादशाह बहादुर शाहँ जफर और उसके तीनों पुत्रों को अंग्रेज अधिकारी लेफ्टीनेंट हड्सन ने हुमायूँ के मकबरे से ही गिरफ्तार किया था।

हुमायूँ ज्योतिष में अत्यधिक विश्वास रखता था। वह सप्ताह के सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनता था। वह अफीम का शौकिन था।